12

वेद

ऋग्वेद संहिता –

ऋग्वेद संहिता में ऋचाओं का संग्रह है। 'ऋचा' उसे कहते है जिसके द्वारा देवताओं की स्तुति की जाती है। अथवा चरण और अर्थों से युक्त वृत्तबद्ध मन्त्रों को ऋचा कहते है "पादेनार्थेन चोपेता वृत्तबद्धा मन्त्राः"।

महर्षि पतञ्जलि के अनुसार ऋग्वेद की 21 शाखायें है। ऋग्वेद को मण्डलों एवं सूक्तों में विभाजन तथा ऋग्वेद का सर्वप्रथम पदपाठ, शाकल ने किया, अतः इसे शाकल संहिता भी कहा जाता है। ऋग्वेद में 33 देवताओं की स्तुतियाँ की गयी है। ऋग्वेद में 20 सूक्त संवाद सूक्त है

Scanned with CamScanner

यजुर्वेद संहिता →

यजुर्वेद संहिता, यजुसों का संग्रह है। यजुस का अर्थ है जिसमें अक्षरों की संख्या नियत न हो "अनियताक्षरोवसानो यजुः" "गद्यात्मको यजुः" एवं शेषो यजुः शब्दः।

सामवेद संहिता →

—×—×—×— 'साम' शब्द का शाब्दिक अर्थ है देवों को प्रसन्न करने वाला गान। 'सा' और 'अम' से मिलकर 'साम' शब्द की उत्पत्ति हुई है। जहाँ 'सा' का अर्थ ऋचा और अम् का अर्थ है - षड्ज, ऋषभ, गान्धार आदि सप्तस्वर। अतः ऋग्वेद की ऋचायें जब स्वरों से मिलती है तब साम बनता है।

साम के बिना यज्ञ नहीं होता है "नासामायज्ञोभवति

16

अथर्ववेद संहिता →

अंगिरा वंशीय अथर्वा ऋषि द्वारा दृष्ट होने के कारण इस वेद को अथर्ववेद संहिता के नाम से जाना जाता है। इसे भृग्वंगिरा वेद तथा ब्रह्मवेद के नाम से भी जाना जाता है। इसका ऋत्विक ब्रह्मा कहा जाता है। इस वेद के देवता 'सोम' और आचार्य सुमन्तु है।

Scanned with CamScanner